Unit-5

पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त भाषा शिक्षा के लिए अतिरिक्त साधन :—

शिक्षण उद्देश्यों की पूर्ति के साथ-साथ उसे प्रभावी, रोचक और सफल बनाने हेतु पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अनेक सहायक साधनों का प्रयोग किया जाता है, कक्षा में अनुशासन बनाये रखने के साथ-साथ विषय को समझाने में भी यह सहायक होते हैं किन्तु यह तभी उपयुक्त कहलायेंगे जब सीखने - सिखाने के अनुकूल हो एवं विद्यार्थियों को सोचने - विचारने, अपनी समझ को परखने एवं समझ का विस्तार करने में सहायक हो।
इन साधनों को दो रूप से भागों में विभाजित कर सकते हैं:—

(1) मौखिक साधन
(2) दृश्य-श्रव्य साधन

मौखिक साधनों में मुख्य रूप से प्रश्नोत्तर आते हैं और दृश्य - श्रव्य साधनों में श्यामपट्ट, चार्ट, मानचित्र, व्हाइट बोर्ड, रेडियो, टेलीविजन आदि आते हैं।

दृश्य - श्रव्य साधनों का तात्पर्य :—

भाषा शिक्षण के समय कुछ कठिन शब्दों या स्थलों का स्पष्टीकरण करने के लिए मौखिक उदाहरणों की सहायता ली जाती है, मौखिक रूप से शब्द-चित्र प्रस्तुत करने वाले साधनों को मौखिक उदाहरण कहा जाता है, जिन सामग्रियों के प्रयोग से विद्यार्थी

सुनकर मन में शब्द - चित्र का निर्माण करता है और सुखद स्थल को समझता है, उन उपकरणों को श्रव्य उपकरण कहा जाता है।

कुछ साधन दृश्य होते हैं, इन साधनों को देखकर शब्द, अर्थ या भाव को समझा जाता है, श्रव्य उपकरणों में श्रवेन्द्रियों का प्रयोग होता है तो दृश्य उपकरणों को साक्षात चक्षुओं से देखा जाता है, कुछ उपकरण ऐसे होते हैं जो श्रव्य - दृश्य दोनों होते हैं। ऐसे उपकरण बहुत कम हैं, श्यामपट्ट, चार्ट, पोस्टर आदि दृश्य उपकरण हैं, रेडियो, ग्रामोफोन, टेपरिकार्डर आदि श्रव्य उपकरण हैं और टेलीविजन, अभिनय आदि श्रव्य- दृश्य दोनों हैं, किन्तु "श्रव्य- दृश्य उपकरण" नाम व्यापक है और केवल श्रव्य या केवल दृश्य को भी सामान्यतः श्रव्य- दृश्य उपकरण कह दिया जाता है, अतः भाषा शिक्षण में इनके प्रयोग की चर्चा करते समय सूक्ष्म भेद को ध्यान में नहीं रखा जायेगा।

भाषा शिक्षण में दृश्य - श्रव्य उपकरणों की आवश्यकता :—

अध्यापक को शिक्षण कार्य में सहायता देने हेतु विज्ञान ने अनेक सहायक साधनों को उपलब्ध करा दिया है, इन सहायक साधनों में वे सब साधन, प्रणालियाँ तथा उपकरण आ जायेंगे जिनकी सहायता से अध्यापक विद्यार्थियों की नेत्र और कर्ण -इंद्रियाँ

Page No.
Date :

को प्रभावित करता है, ऐसा कहा जाता है कि आज जो भिन्न-भिन्न व्यक्ति एक-दूसरे को परस्पर नहीं समझते, उनके दो प्रमुख कारण है—

(1) वे दूसरे पक्ष की बात को नहीं सुनते,

(2) वक्ता द्वारा कहे हुए शब्दों का वे भिन्न अर्थ लगाते हैं।

सहायक साधनों द्वारा हम प्रारम्भ से बालकों को इस बात का प्रशिक्षण देते है कि वक्ता द्वारा कहे शब्दों को ठीक प्रकार से सुने और उनका ठीक-ठीक अर्थ लगाये, ऐसा होने पर वे ज्ञान को ठीक प्रकार से ग्रहण करेंगे, इस दृष्टि से देखा जाये तो सहायक साधन अध्यापक की इस बात में सहायता करते है कि वह अपना कार्य अधिक कुशलता से कर सके।

Scanned with CamScanner